Deptt of Pol. Science

B.A Part II Hons

— By - Dr. Mithilesh [illegible]

Marx - Dialectical Materialism

मार्क्स के द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धान्त का मार्क्स के दर्शन में विशिष्ट स्थान है। वस्तुतः यह उसके सम्पूर्ण दर्शन की आधारशिला (आधार) है। लेनिन ने इसे ~~[illegible]~~ साम्यवाद का आधार बताया। इसी के आधार पर उसने भौतिकवादी व्याख्या, वर्ग संघर्ष एवं इतिहास की व्याख्या की है।

स्टालिन ने साम्यवादी दल के सम्बन्ध में लिखा है कि - "Dialectic enables the party to find the right orientation to any situation to understand the inner connections of current events to foresee their course and to percive not only how and in what direction they are developing in the present but how and in what direction they are bound to develop in the future."

मार्क्स का द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद मार्क्स ने हीगल से ग्रहण किया है, अपितु मार्क्स ने हीगल के द्वन्द्ववाद को (उलटकर) उपयोग किया। लेनिन के शब्दों में - "In Hegel dialectic stood on its head Marx turned it right way up by ..."

removing the mystifications of idealism.

मार्क्स एक भौतिकवादी था। उसके अनुसार द्वन्द्ववाद का आधार पदार्थ (Matter) है, मस्तिष्क की सोच-विचार (Idea) नहीं। उसके विचार में भौतिक जगत ही सब का आधार है। भौतिक जगत में परिवर्तन होता रहता है - कुछ वस्तुएँ विकसित होती हैं, कुछ नष्ट होती हैं और कुछ की पुनरावृत्ति होती है। यह विकास क्रम अविरल रूप से चलता है। विधानवाद (Thesis), प्रतिवाद (Antithesis) और संश्लेषण (Synthesis) के द्वारा [illegible] उदाहरण लेकर, गेहूँ के दाने (पदार्थ) के द्वन्द्व का अध्ययन करें तो ज्ञात होता है कि उसका विकास हो रहा है, गेहूँ का बीज 'वाद' है तो पौधा उसका प्रतिवाद है और पौधे का नाश होने पर [illegible] संश्लेषण ही विकास का [illegible] निश्चित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद कहलाता है।

मार्क्स ने हेगेल के [illegible] एवं मार्क्स के द्वन्द्ववाद में पायी जाने वाली समानता एवं असमानता को स्पष्ट किया है — "Marx: ... Hegel the dialectical ...

realised, the view that conflict progress results from the c[illegible] of opposing forces. However, he reversed Hegel's view that conflict is in the realm of ideas and that material[illegible] are only reflections. The clo[illegible] Marx said, is only one of [illegible] forces, and ideas are only [illegible] of the material environment which men live.

मार्क्स के इस [illegible] [illegible] की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

(i) प्रकृति के सभी पदार्थ [illegible] से जुड़े हुए हैं अर्थात् उनमें पारस्परिक सम्बन्ध विद्यमान है।

(ii) प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ [illegible] [illegible] से लेकर सूर्य पिंड तक [illegible] है।

(iii) प्रकृति में [illegible] के कारण [illegible] परिवर्तित होते रहते हैं।

(iv) [illegible] [illegible] तथा गुणात्मक [illegible] [illegible] की [illegible] है।

(v) प्रत्येक वस्तु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] Positive तथा Negative [illegible] [illegible] संघर्ष के [illegible] [illegible] आधार [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

(e) [illegible] रूप [illegible] उत्पादन से ही विकास [illegible]
की [illegible] विभिन्न अवस्थाओं ऐतिहासिक
निर्धारित होते हैं द्वन्द्वात्मक होता
मार्क्स [illegible] भौतिकवाद
वाद के सिद्धान्त के आधार के आधार पर
व्याख्या है कि पूँजीवाद समाज की स्थापना
के स्थान पर साम्यवादी समाज
होगी। उनके अनुसार ऐतिहासिक भविष्य
युग में [illegible] अनिवार्य [illegible]
में [illegible] रहा है और [illegible] के
विकास [illegible] वर्तमान युग के
पूँजीपति और [illegible] सर्वहारा
वर्ग में [illegible] पूँजीवाद का
अन्त होगा और साम्यवाद की स्थापना
होगी। मार्क्स के अनुसार [illegible] वर्ग-
विभाजन और विरोधी (प्रतिवाद) (Thesis)
और (Anti-Thesis) रहे हैं। इनका
संश्लेषण Synthesis वर्गविहीन समाज की
स्थापना के ~~रूप~~ होगा। पूँजीवाद
अपने [illegible] में ही [illegible] नाश
के बीज रखता है। इतिहास की विकास
प्रक्रिया के आर्थिक आधार भौतिक-
वादी शक्तियों में [illegible] है [illegible]
निर्धारण का विश्लेषणात्मक स्वरूप [illegible]
रूपी और [illegible] है
मार्क्स ने अपने [illegible]
वैज्ञानिक व ऐतिहासिक [illegible]

"The history of all hitherto existing society is the history of class struggles." Hitherto every form of society has been based on the antagonism of oppressing and oppressed classes.

(c) [illegible] सिद्ध किया है। मार्क्स का [illegible] क्रांति नहीं होगा [illegible] के बीच [illegible] को पूर्ण [illegible] करेगा। [illegible] द्वारा मार्क्स वर्ग-संघर्ष की [illegible] बना दिया है। द्वन्द्वात्मक प्रकृति के [illegible] में [illegible] विरोधयुक्त [illegible] विकास की [illegible] और [illegible] है। [illegible] के आधार पर वर्ग संघर्ष को मार्क्स [illegible] बताता है।

निष्कर्षतः मार्क्स के अनुसार द्वन्द्ववादी भौतिकवाद का वाद, प्रतिवाद और संश्लेषण [illegible] है [illegible] नहीं। जिस [illegible] की ओर से मार्क्स द्वन्द्वात्मकवाद चल रहा है, वह एक [illegible] की स्थापना है [illegible] कोई वर्ग [illegible] न कोई [illegible]। यह अन्तिम संश्लेषण (Synthesis) है जिसके प्रतिवाद Anti-Thesis का जन्म नहीं होगा। क्योंकि वर्गहीन समाज की स्थापना के साथ-साथ वर्ग [illegible] की द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया का [illegible] हो जायेगा।

आलोचना

[illegible] के [illegible] किसी [illegible] ने [illegible]

(i) मार्क्स ने [illegible] नहीं किया है [illegible]

[illegible] के द्वन्द्ववाद से [illegible]

(ii) मार्क्स

है एवं आधार है। लेनिन का कथन है कि मार्क्स के द्वन्द्ववाद को बिना समझे हुए हेगेल के तर्कशास्त्र के द्वन्द्ववाद को समझा किया जाय।

(iii) मार्क्स की मान्यता है कि पदार्थ गतिशील है, इसने विभिन्न तत्वों को जन्म दिया और अपना विकास करता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि प्रकृति में परिवर्तन का क्रम अनियमित और स्वतः होते हैं।

(iv) मार्क्स की इस मान्यता को भी नहीं माना जा सकता है कि पदार्थ का विकास विरोधी तत्वों के संघर्ष के द्वारा होता है। Carew Hunt ने इसकी आलोचना की और कहा :- The Marxian Version of the dialectic is indeed open to a serious of objection. The dialectic can properly be applied to the development of ideas through conflict and contradiction and Hegel provides rational explanation of the development yet although dialectical materialism can point to something analogous to contradiction in the material world not only are these analogous arbitrary, but even if they were it would still remain a complete mystery why the material world

(9)

should exhibit them. Dialectical materialism in fact asserts the matter but that develops as ideas do only while one can see why ideas develop as they do, as for example in discussion, there is no conceivable reason why material things should develop in the same way.

(v) मार्क्स ने हीगल के द्वन्द्ववाद को [illegible] आध्यात्मिकता के स्थान पर भौतिकता [illegible] रख दिया है किन्तु इसमें यह नहीं बताया कि आध्यात्मिक शक्तियों के स्थान भौतिक शक्तियाँ कैसे [illegible] लेती हैं।

(vi) मार्क्सवाद अपने [illegible] का प्रतिपादन करने [illegible] विरोधी विचारों में [illegible] है। यह सभी जानते हैं कि [illegible] परिस्थितियों का [illegible] निर्माण करता है तो [illegible] करता है, वे परिस्थितियाँ [illegible] निर्माण नहीं है।

(vii) मार्क्सवाद की मान्यता है कि राज्य की उत्पत्ति [illegible] है [illegible] [illegible] होता है तथा इसके [illegible] शक्ति का [illegible] का प्रयोग [illegible] है। लेकिन [illegible] युक्तिसंगत नहीं है। [illegible] मान्यता [illegible] है कि [illegible]

(viii) यह [illegible] है कि [illegible]

[illegible]

[illegible] के [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है Concern that [illegible] को — the dialectic may give us valuable insight into the history of development, the Marxist claims that it constitutes the only scientific approach to reality be allowed.

[illegible] के [illegible] के [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] है Nowhere unfortunately, does Marx tells us what he means by materilism. But at least he makes it plain that his materialism is dialectical. In dilectical materialism, evolution is the development of matter from within, environment helping or hindering but neither originating the evolutionary process nor capable of preventing it from reaching its inevitable goal.